आई एस एस एन 0971-9873

# आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-29, अंक-3 मार्च 2015

## इस अंक में


- भारत में तम्बाकू नशा उन्मूलन : एक स्वास्थ्य प्राथमिकता 25
- हिन्दी में चिकित्साविज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तकों के लिए द्विवार्षिक (2012-2013) आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह 27
- वर्ष 2011 एवं वर्ष 2012 के लिए आई सी एम आर पारितोषिक/पुरस्कार 28
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 35


## संपादक मंडल


**अध्यक्ष** — श्री भानु प्रताप शर्मा
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

**प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग** — डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव

**संपादक** — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय

**प्रकाशक** — श्री जगदीश नारायण माथुर


## भारत में तम्बाकू नशा उन्मूलन : एक स्वास्थ्य प्राथमिकता

जहां तम्बाकू का प्रयोग कई विकसित देशों में घट रहा है वहीं भारत जैसे विकासशील देशों में यह बढ़ता जा रहा है। वैश्विक वयस्क तम्बाकू सर्वेक्षण *(ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे)* की ताजा राष्ट्रीय स्थिति के अनुसार वर्ष 2009-2010 के दौरान भारत में लगभग 27.5 करोड़ लोग तम्बाकू का सेवन करते थे जिनमें 35 प्रतिशत से अधिक लोग वयस्क थे। उनमें अधिकांश (16.4 करोड़) लोग धुआंरहित तम्बाकू के प्रयोगकर्ता थे और लगभग 4.2 करोड़ दोनों ही रूपों में तम्बाकू का सेवन करते थे। भारत में प्रतिवर्ष अनुमानतः 10 लाख लोग तम्बाकू से संबद्ध रोगों के कारण मौत का शिकार बनते हैं। तम्बाकू के कारण होने वाली रुग्णता और मौतों को कम करने के लिए एक संयुक्त नीति अपनाने की आवश्यकता है। प्रथम उन लोगों को तम्बाकू सेवन की शुरुआत करने से रोकना जो पहले इसके सेवन से दूर रहे हों; और दूसरा वर्तमान प्रयोगकर्ताओं को इसकी आदत से छुटकारा दिलाना। यदि मौजूदा तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं ने इस आदत को नहीं छोड़ा तो इनकी आधी से अधिक संख्या तम्बाकू से जुड़े रोगों के कारण मौत का शिकार हो जाएगी। यदि, वर्ष 2020 तक मौजूदा वयस्क तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं की संख्या घटकर आधी हो जाए तो तम्बाकू के कारण होने वाली 18 करोड़ मौतें बचाई जा सकती हैं। कम समय में वर्तमान तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं को तम्बाकू संबद्ध रुग्णता एवं मौतों से बचाने के लिए उन्हें इसकी आदत छुड़ाना एक मात्र तरीका है। इसीलिए वर्तमान तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं को तम्बाकू की आदत से छुटकारा देने वाली सेवाएं प्रदान करना अनिवार्य है।

तम्बाकू नशा उन्मूलन के महत्व को देखते हुए भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने भारत स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यालय के सहयोग में वर्ष 2002 में 13 तम्बाकू नशा उन्मूलन क्लीनिकों की शुरुआत की और उसके बाद यह संख्या बढ़कर 19 हो गई। इन क्लीनिकों का उद्देश्य धूम्रपानकर्ताओं और तम्बाकू चबाने वालों को इसकी आदत छुड़ाने के लिए नीतियां विकसित करना, इस प्रकार की सेवाएं प्रदान करने में अनुभव प्राप्त करना, तथा इन नीतियों को और विकसित करने की संभाव्यता तलाश करना है। प्रथम पांच वर्षों की अवधि में कुल 34,741 तम्बाकू प्रयोगकर्ता इन क्लीनिकों में आए जिनमें 23,320 व्यक्तियों से संबंधित सूचनाएं दर्ज की गईं। केवल 69 प्रतिशत प्रयोगकर्ताओं को व्यवहार संबंधी परामर्श दी गई जबकि शेष 31 प्रतिशत व्यक्तियों को परामर्श एवं दवाइयां दोनों दी गईं। छठे सप्ताह के फॉलो अप में 14 प्रतिशत व्यक्तियों ने तम्बाकू का प्रयोग पूरी तरह बन्द करना दर्ज कराया तथा अन्य 22 प्रतिशत व्यक्तियों ने हानिकर प्रभाव में गिरावट दर्ज की। इन क्लीनिकों की प्रमुख कमियां ये थीं कि उनमें पहुंचने वाले तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं की संख्या सीमित थी और ग्रामीण क्षेत्रों के तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं का अनुपात बहुत ही कम था।

तम्बाकू नशा उन्मूलन केन्द्रों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार के कार्यक्रमों के प्रभाव को ज्ञात करने हेतु तमिल नाडु के ग्रामीण क्षेत्रों में तम्बाकू नशा उन्मूलन के लिए समुदाय पर आधारित एक अध्ययन किया गया। दो माह के फॉलो अप अध्ययन में 12.5 प्रतिशत तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं ने इसका प्रयोग बन्द करने तथा

21.7 प्रतिशत ने स्वास्थ्य क्षति में गिरावट आने की सूचना दी। जबकि कंट्रोल वर्ग में ये दरें क्रमशः 6.0 प्रतिशत और 9.0 प्रतिशत थीं। कंट्रोल वर्ग के व्यक्तियों में केवल इश्तहार के माध्यम से जागरूकता फैलाई गई थी, इससे इस बात को बल मिलता है कि न्यूनतम प्रयास से भी सफलता मिलने की संभावना है। यदि इसे प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के साथ जोड़ दिया जाए तो भारी संख्या में तम्बाकू प्रयोगकर्ता तम्बाकू की आदत छोड़ सकेंगे।

इसी प्रकार केरल राज्य के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में आने वाले धूम्रपानकर्ताओं को दो वर्गों में विभाजित करके नशा उन्मूलन सेवाएं प्रदान की गईं। प्रथम वर्ग के व्यक्तियों को चिकित्सक द्वारा केवल नशा छोड़ने की सलाह दी गई और दूसरे वर्ग के व्यक्तियों को प्रशिक्षित स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा धूम्रपान बन्द करने के लिए एक अतिरिक्त परामर्श सेवा प्रदान की गई। तीन महीने के फॉलो अप में प्रथम वर्ग में धूम्रपान बन्द करने की दर 16.0 प्रतिशत तथा द्वितीय वर्ग में 21.0 प्रतिशत थी। ये दरें तमिल नाडु के ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय आधारित इंटरवेंशन वर्ग और तम्बाकू नशा उन्मूलन केन्द्रों की तुलना में काफी अधिक थीं। यदि, प्राथमिक स्वास्थ्य प्रणाली के सभी चिकित्सक उनके पास चिकित्सा हेतु आने वाले व्यक्तियों को तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की सलाह दें तो संभवतः बड़ी संख्या में लोग तम्बाकू प्रयोग बन्द कर देंगे। हालांकि, केरल में चिकित्सकों पर संपन्न एक अध्ययन से पता चला कि अधिकांश चिकित्सक बहुत कम संख्या में अपने रोगियों से तम्बाकू के विषय में चर्चा करते हैं, इससे संकेत मिलता है कि पेशेवर चिकित्सकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अपने सभी रोगियों को तम्बाकू संबंधी भी परामर्श दें। *ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे, इंडिया* के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत धूम्रपानकर्ताओं और 27 प्रतिशत तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं को चिकित्सकों द्वारा तम्बाकू की आदत छोड़ने की सलाह दी गई।

बंगलौर शहर में स्थित वक्ष चिकित्साविज्ञान क्लीनिक के अंतर्गत तम्बाकू उन्मूलन क्लीनिक में आने वाले रोगियों के एक समूह में तम्बाकू प्रयोग बन्द करने के प्रभाव का अध्ययन किया गया। चौबीस महीने के फॉलो अप के दौरान तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की दर 5 प्रतिशत थी। केरल राज्य में मधुमेह ग्रस्त रोगियों पर संपन्न एक ताजा अध्ययन में स्वतः तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की उच्च दर दर्ज की गई। इस अध्ययन के अंतर्गत सभी रोगियों को तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की प्रभावशाली सलाह दी गई। इंटरवेंशन वर्ग के रोगियों को प्रशिक्षित एवं प्रमाणित गैर चिकित्सीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के माध्यम से मधुमेह के संदर्भ में धूम्रपान बन्द करने की सलाह दी गई। छः माह के फॉलो अप में इस वर्ग के 51.8 प्रतिशत रोगियों ने धूम्रपान करना छोड़ दिया जो कि कंट्रोल वर्ग में 12.5 प्रतिशत की तुलना में काफी अधिक थी। एक वर्ष के फॉलो अप में इस इंटरवेंशन वर्ग में इस आदत को छोड़ने की दर 45.8 प्रतिशत रही जबकि कंट्रोल वर्ग में यह दर 19.8 प्रतिशत थी।

धूम्रपान के साथ क्षयरोग यानि तपेदिक एक अन्य रोग जुड़ा हुआ है। केरल में सामान्य आबादी की तुलना में क्षयरोग से पीड़ित रोगियों में धूम्रपान करने की दर दो गुणा अधिक है। ऐसे रोगियों को क्षयरोग की चिकित्सा के साथ-साथ तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की भी सलाह दी गई जिससे कि इलाज के बाद रोग पुनः न उभर पाए। भारत में क्षयरोगियों द्वारा धूम्रपान के स्थान पर तम्बाकू चबाने की भी संभावना प्रकाश में आई है। ऐसे व्यक्तियों को भी तम्बाकू नशा उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत परामर्श देने की आवश्यकता है।

पश्चिमी देशों की तुलना में भारत में बिना किसी सहायता के धूम्रपान की आदत छोड़ने की दर बहुत कम है। भारत में तम्बाकू प्रयोगकर्ता किसी रोग की चपेट में आने के बाद ही इस आदत को छोड़ता है। इसलिए चिकित्सकों और अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा तम्बाकू को जन स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरे के रूप में प्रचारित किया जाना चाहिए। सामान्य आबादी में तम्बाकू नशा उन्मूलन कार्यक्रम से पूर्व स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा इस आदत को छोड़ना उपयोगी हो सकता है। इस उद्देश्य से संयुक्त राज्य अमरीका के *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ* के *फोगार्टी इंटरनेशनल सेंटर* की सहायता में *क्विट टोबैको इंटरनेशनल* नामक परियोजना संचालित की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य मेडिकल छात्रों को तम्बाकू प्रयोग करने की आदत से छुटकारा दिलाना है। जिससे भविष्य में वे रोगियों को अधिक प्रभावी तरीके से तम्बाकू नशा की आदत को छुड़ाने में कारगर साबित हो सकें। यह परियोजना भारत और इंडोनेशिया में संचालित की गई। इस परियोजना के अंतर्गत केरल और कर्नाटक राज्यों में स्थित पांच मेडिकल कॉलेजों के विभिन्न विभागों में 15 पाठ्यक्रम मॉड्यूल विकसित एवं कार्यान्वित किए गए तथा उनका मूल्यांकन किया गया। इन मॉड्यूल्स की सूची और उनका विस्तृत विवरण ***क्विट टोबैको इंटरनेशनल*** (QTI) की वेबसाइट (http://quittobaccointernational.org) पर उपलब्ध है। प्रत्येक मॉड्यूल में पांच घटक हैं। एक लघु व्याख्यान माला, क्लीनिकल केस की स्थिति, फैक्ट शीट, प्रशिक्षक संसाधन, और परीक्षा के सैम्पल प्रश्न। इसके अलावा 5 से 8 मिनट की अवधि की 14 लघु क्लीनिकल वीडियो फिल्में भी तैयार की गईं, जो वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। ये सभी संसाधन न केवल भारत और इण्डोनेशिया बल्कि विश्व के अन्य भागों में मेडिकल छात्रों के शिक्षण के दौरान उपयोग में लाए जा सकते हैं।

तम्बाकू नशा उन्मूलन की आवश्यकता स्वास्थ्य क्षेत्र से बढ़कर अन्य क्षेत्रों के लिए भी है। बिहार राज्य में तम्बाकू नशा उन्मूलन की दिशा में शिक्षकों द्वारा की गई कार्यवाही से मिली सफलता इसका उत्तम उदाहरण है। इस कार्यवाही के अंतर्गत शिक्षा संबद्ध प्रयास, तम्बाकू नियंत्रण की नीतियां और इसके प्रयोग को बन्द करने से संबंधित सहायता सम्मिलित हैं। तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की दर कंट्रोल वर्ग में 5 प्रतिशत की तुलना में इंटरवेंशन वर्ग के अंतर्गत शिक्षकों में 20.0 प्रतिशत दर्ज की गई।

## निष्कर्ष

भारत में तम्बाकू नशा उन्मूलन कार्यक्रम को कई क्षेत्रों के अंतर्गत कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है। चिकित्सा छात्रों और अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के पाठ्यक्रम में तम्बाकू नशा उन्मूलन प्रशिक्षण को सम्मिलित करके, स्वास्थ्य पेशेवरों को अपनी नियमित चिकित्सा सुरक्षा सेवा में तम्बाकू प्रयोग बन्द करने की सलाह देने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करना, मधुमेह, क्षयरोग और अन्य विशिष्ट रोग स्थितियों में रोगियों को तम्बाकू संबद्ध खतरों के प्रति परामर्श देकर वर्तमान तम्बाकू प्रयोगकर्ताओं में तम्बाकू नशा छोड़ने की उच्च दर प्राप्त की जा सकती है।

यह आलेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक *'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च'* के अप्रैल, 2014 अंक में *'टोबैको सेसेशन इन इंडियाः अ प्रिऑरिटी हेल्थ इंटरवेंशन'* शीर्षक से प्रकाशित लेख पर आधारित है।

# हिन्दी में चिकित्साविज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तकों के लिए द्विवार्षिक (2012-2013) आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में दिनांक 12 मार्च, 2015 को हिन्दी में चिकित्साविज्ञान संबंधी पुस्तकों के लिए द्विवार्षिक (2012-2013) आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। आई सी एम आर के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी.एस.जवाहर की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में द्वैवार्षिक (2012-2013) आई सी एम आर पुरस्कार के अंतर्गत गाज़ियाबाद के श्री विनोद कुमार मिश्र को उनकी पुस्तक ***विज्ञान की विकलांगता पर विजय*** के लिए एक लाख रुपए का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

सर्वप्रथम प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय ने अध्यक्ष, पुरस्कार प्राप्तकर्ता, वरिष्ठ अधिकारीगण और आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के अध्यक्ष डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव ने पुरस्कार (2012-2013) के विषय में बताते हुए पुरस्कृत पुस्तक के लेखक श्री विनोद कुमार मिश्र के विषय में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने बताया कि श्री मिश्र 3 वर्ष की आयु में पोलियोग्रस्त होने के बावजूद अपनी हिम्मत व साहस और मेहनत के बल पर इलेक्ट्रॉनिक्स एवं दूरसंचार इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त कर आज सार्वजनिक उद्यम में सहायक महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं। इनकी 67 पुस्तकें व अनेक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने श्री मिश्र को बधाई दी।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में आई सी एम आर के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी. एस. जवाहर ने श्री मिश्र को उनकी पुस्तक के माध्यम से जन साधारण को राजभाषा हिन्दी में समस्त जानकारी दिलाने में उनके प्रयास की सराहना की तथा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई दी।

मानव संसाधन विकास प्रभाग के प्रमुख डॉ के.के. सिंह ने विकलांगों के लिए नवीन उपकरणों के विषय में जानकारी देते हुए आई सी एम आर द्वारा ब्रेल लिपि में प्रकाशित पुस्तकों का भी उल्लेख किया। उन्होंने श्री मिश्र को बधाई दी।

पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री विनोद कुमार मिश्र ने बहुत ही सरल व सहज रूप में अपने अनुसंधान कार्यों का उल्लेख करते हुए हमारे देश के विकलांगों के विषय में कहा कि विशेष रूप से यू पी व बिहार में विकलांगों की स्थिति बहुत ही दयनीय है। उन्हें केवल कामचलाऊ उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं। दुर्घटना में उन्हें दिया जाने वाला मुआवज़ा एवं पेंशन भी बहुत ही कम है। इस दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए। हावर्ड की एक कम्पनी का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि वहां 2000 कर्मचारियों में 280 विकलांग कार्यरत हैं क्योंकि उनकी मेहनत लगन के साथ उनका काम करने का तरीका बहुत ही अच्छा है। विकलांगों के लिए अभी सुविधाओं का अभाव है। इस क्षेत्र में उचित जानकारी के आधार पर इक्यूपमेंट्स बनाए जाने पर भी ज़ोर दिया जिससे विकलांगों को आगे बढ़ने का मौका मिल सकेगा। इस दिशा में आई सी एम आर में होने वाले प्रयासों की उन्होंने सराहना की।

इसके उपरांत अध्यक्ष महोदय के करकमलों द्वारा पुरस्कृत पुस्तक के पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री विनोद कुमार मिश्र को 1 लाख रुपए की धनराशि का चेक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के समापन में प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के वैज्ञानिक 'ई' डॉ रजनी कांत ने आमंत्रित अतिथि, पुरस्कार प्राप्तकर्ता, कार्यक्रम के अध्यक्ष परिषद मुख्यालय के वरिष्ठ उपमहानिदेशक महोदय, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ श्रीवास्तव के साथ-साथ अन्य उपस्थित अतिथियों व अधिकारियों को धन्यवाद दिया और प्रशासन एवं तकनीकी स्टाफ को भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने एवं सहयोग प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया।

## वर्ष 2011 एवं वर्ष 2012 के लिए आई सी एम आर पारितोषिक/पुरस्कार

| वार्षिक पारितोषिक/पुरस्कार - 2011 | |
|---|---|
| **पुरस्कार प्राप्तकर्ता** | **अनुसंधान क्षेत्र** |
| **अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार - 2011** | |
| **प्रो. धीरज गुप्ता**<br>आचार्य<br>फुफ्फुसीय चिकित्साविज्ञान विभाग<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>चण्डीगढ़ - 160 012 | सार्काइडोसिस |
| **बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ संगीता मुखोपाध्याय**<br>स्टाफ वैज्ञानिक - V<br>डी एन ए फिंगरप्रिंटिंग एवं नैदानिकी केन्द्र (CDFD)<br>बिल्डिंग 7, गृहकल्प, 5-2 - 399/B<br>हैदराबाद - 500 001 | *एम. ट्युबरकुलोसिस*<br>रोगजनन की प्रक्रिया |
| **डॉ एच. बी. डिंग्ले स्मारक पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ नीरज कुमार श्रीवास्तव**<br>वैज्ञानिक पूल ऑफिसर<br>तंत्रिकाविज्ञान प्रयोगशाला<br>स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़<br>जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय<br>नई दिल्ली - 110 067<br>एवं<br>**डॉ दीपक बंसल**<br>अतिरिक्त आचार्य<br>बाल रुधिरविज्ञान अर्बुदविज्ञान इकाई<br>बालचिकित्साविज्ञान विभाग<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>चण्डीगढ़ - 160 012 | डुशेन पेशीविकृति में<br>सीरम लिपिड्स का विश्लेषण<br><br><br><br><br><br>बच्चों में चिरकारी इडियोपैथिक<br>थ्रॉम्बोसाइटोपीनिक परप्यूरा |
| **आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ रोशन बहरम कोलाह**<br>वैज्ञानिक 'एफ'<br>राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान<br>13वां तल, न्यू मल्टीस्टोरीड बिल्डिंग<br>के ई एम अस्पताल कैम्पस, परेल<br>मुम्बई - 400 012 | पश्चिमी भारत में हीमोग्लोबिन<br>विकृतियों का मूल्यांकन |

| अल्पसुविधाप्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार - 2011 | |
|---|---|
| **प्रो अनिल कुमार**<br>आचार्य, भेषजगुणविज्ञान विभाग<br>भेषजगुणविज्ञान संस्थान<br>पंजाब विश्वविद्यालय<br>चण्डीगढ़ - 160 014 | तंत्रिका संरक्षी प्रक्रियाओं पर<br>तंत्रिका भेषजगुणविज्ञानी अध्ययन |
| **अल्पविकसित क्षेत्रों में संपन्न जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ कंगियम रेखा देवी**<br>वैज्ञानिक 'डी'<br>क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (पूर्वोत्तर क्षेत्र)<br>पोस्ट बॉक्स नं. 105<br>डिब्रूगढ़ - 786 010 | पूर्वोत्तर भारत में पैरागोनिमिएसिस पर अध्ययन |
| **मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ सिमन्ती दत्ता**<br>सहायक आचार्य<br>यकृत अनुसंधान केन्द्र<br>स्कूल ऑफ डाइजेस्टिव ऐण्ड लीवर डिसीज़<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>कोलकाता - 700 020<br>एवं<br>**डॉ अविनाश सोनावने**<br>सहायक आचार्य<br>स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी<br>KIIT विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर - 751 024 | यकृतशोथ बी विषाणु संबद्ध यकृतरोग<br>में आण्विक प्रक्रियाओं पर अध्ययन<br><br>} संयुक्त रूप से<br><br>क्षयरोग की चिकित्सा हेतु संयुक्त सूक्ष्मजीवीरोधी<br>पेप्टाइड आधारित चिकित्सा |
| **शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ शीतल चावला**<br>युवा अंवेषक<br>क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र<br>180, उद्योग विहार, फेज़ I<br>गुड़गांव - 122 016 | एम्पिरोमेट्रिक हीमोग्लोबिन A1c बायोसेंसर |
| **एक वर्ष छोड़कर दिए जाने वाले पुरस्कार - 2011** | |
| **जैवआयुर्विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान हेतु डॉ बी. आर. अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार - 2011** | |
| **प्रो. एन. के. मेहरा**<br>आचार्य एवं विभागाध्यक्ष<br>प्रतिरोपण प्रतिरक्षाविज्ञान एवं प्रतिरक्षा आनुवंशिकी विभाग<br>अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान<br>नई दिल्ली - 110 029<br>एवं | } संयुक्त रूप से |

| | |
|---|---|
| **डॉ सैयद ई. हसनैन**<br>आचार्य<br>कुसुमा स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल टेक्नोलॉजी<br>भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान<br>नई दिल्ली - 110 016 | |
| **डॉ डी. एन. प्रसाद स्मारक व्याख्यान पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ श्याम एस. शर्मा**<br>आचार्य<br>भेषजगुणविज्ञान एवं विषविज्ञान विभाग<br>राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (NIPER)<br>मोहाली - 160 062 | मधुमेहज तंत्रिकाविकृति में परॉक्सीनाइट्राइट PARP पाथवे की संबद्धता |
| **डॉ जे. बी. श्रीवास्तव व्याख्यान पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ अनिरबन बसु**<br>वैज्ञानिक - V<br>राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र<br>मानेसर<br>हरियाणा - 122 050 | जापानी मस्तिष्कशोथ विषाणु संक्रमण में परपोषी रोगजन की पारस्परिक क्रिया |
| **डॉ एम ओ टी अयंगार स्मारक पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ नीना वलेचा**<br>निदेशक<br>राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान<br>द्वारका, नई दिल्ली - 110 077 | मलेरिया के निदान और इलाज से संबद्ध परिचालन अनुसंधान |
| **डॉ प्रेम नाथ वाही पुरस्कार - 2011** | |
| **प्रो. रवि मेहरोत्रा**<br>निदेशक<br>कौशिकी एवं निवारक अर्बुदशास्त्र संस्थान<br>नोएडा - 201 301<br>एवं<br>**डॉ सुनीता सक्सेना**<br>निदेशक<br>राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान<br>सफदरजंग अस्पताल परिसर<br>नई दिल्ली - 110 029 | मुखीय विक्षतियों के मूल्यांकन में मुखीय ब्रश बायोप्सी का प्रयोग<br><br>} संयुक्त रूप से<br><br>पूर्वोत्तर क्षेत्र में तम्बाकू संबद्ध कैंसर का आनुवंशिक जानपदिक रोगविज्ञान और आण्विक कैंसरजनन |
| **आई सी एम आर चतुर्वेदी कलावती जगमोहन दास स्मारक पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ सुरजीत सिंह**<br>आचार्य, बालचिकित्सा विभाग<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>चण्डीगढ़ - 160 012<br>एवं | भारत में बच्चों में अर्जित हृदयरोग के कारण के रूप में कावासाकी रोग<br><br>} संयुक्त रूप से |

| | |
|---|---|
| **डॉ ए. रतिनावेल**<br>आचार्य एवं विभागाध्यक्ष<br>हृद्वक्ष शल्यक्रिया विभाग<br>तंज़ावूर मेडिकल कॉलेज<br>तंज़ावूर - 613 004 | आण्विक हृदयरोगविज्ञान |
| **आई सी एम आर श्रीमती स्वर्ण कान्ता डिंगले व्याख्यान पुरस्कार - 2011** | |
| **डॉ सुरेश येनुगु**<br>व्याख्याता<br>जन्तु विज्ञान विभाग<br>हैदराबाद विश्वविद्यालय<br>हैदराबाद - 500 046 | पुरुष जनन पथ में सूक्ष्मजीवीरोधी जीन अभिव्यक्ति का इपीजेनेटिक नियमन |
| **वार्षिक पारितोषिक/पुरस्कार - 2012** | |
| **अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ अक्षय आनन्द**<br>सह आचार्य<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>चण्डीगढ़ - 160 012 | तंत्रिकाविज्ञान |
| **बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ देबव्रत दास**<br>आचार्य एवं विभागाध्यक्ष<br>जीवरसायन विभाग<br>आयुर्विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय<br>वाराणसी - 221 005 | नैनोमैटीरियल्स और भेषजगुणविज्ञानी कारकों के नवीन एंटीथ्रॉम्बोटिक प्रयोग |
| **आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ सुजाता नारायणन**<br>वैज्ञानिक 'एफ'<br>राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान<br>1, मेयर सत्यमूर्ति रोड<br>चेटपुट, चेन्नई - 600 031 | *एम. ट्युबरकुलोसिस* का आण्विक जानपदिक रोगविज्ञान |
| **अल्पसुविधाप्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार- 2012** | |
| **डॉ सुएब लुकमान**<br>वैज्ञानिक ग्रेड v (2)<br>मोलीकुलर बायोप्रोस्पेक्शन डिपार्टमेंट ऑफ<br>बायोटेक्नोलॉजी डिवीज़न<br>CSIR केन्द्रीय औषधीय एवं सगन्ध पादप संस्थान<br>लखनऊ - 226 015 | कैंसर रोधी कारकों के रूप में पादप आधारित प्राकृतिक उत्पाद |

| अल्पविकसित क्षेत्रों में संपन्न जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार - 2012 | |
|---|---|
| **डॉ सीराज अहमद खान**<br>वैज्ञानिक 'डी'<br>कीटविज्ञान एवं फाइलेरिया रोग प्रभाग<br>क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (पूर्वोत्तर क्षेत्र)<br>डिब्रूगढ़ - 786 001<br>एवं<br>**विकाश गंगाधर राव**<br>वैज्ञानिक 'एफ'<br>क्षेत्रीय जनजति आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र<br>नागपुर रोड<br>जबलपुर - 482 003 | पूर्वोत्तर भारत में अर्बोवाइरल रोगों की स्थिति<br>} संयुक्त रूप से<br>क्षयरोग : मध्य भारत की जनजातीय आबादी में एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या |
| **आई सी एम आर तिलक वेंकोबा राव पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ गुट्टी रवि कुमार**<br>सहायक आचार्य<br>जीवरसायन विभाग<br>स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़<br>हैदराबाद विश्वविद्यालय<br>हैदराबाद - 500 046 | गोनैडोट्रॉपिन- रेग्युलेशन टेस्टीकुलर हेलीकेज़ |
| **शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ रीतेश अग्रवाल**<br>सहायक आचार्य<br>चिकित्साविज्ञान विभाग<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>चण्डीगढ़ - 160 012 | एलर्जिक ब्रोंकोपल्मोनरी एस्पर्जिलोसिस |
| **डॉ सुभाष मुखर्जी पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ इंदिरा हिन्दुजा**<br>अवैतनिक प्रसूति एवं स्त्रीरोगविज्ञानी<br>प्रसूति एवं स्त्रीरोगविज्ञान विभाग<br>जसलोक अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र<br>मुम्बई - 400 026 | सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी |
| **एक वर्ष छोड़कर दिए जाने वाले पुरस्कार - 2012** | |
| **बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ अनीता हरीश नाडकर्णी**<br>वैज्ञानिक 'डी'<br>राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिर विज्ञान संस्थान<br>के ई एम अस्पताल कैंम्पस, परेल<br>मुम्बई - 400 012 | भारत में प्रमुख हीमोग्लोबिनोपैथीज़ की फीनोटिपिक विविधता हेतु आनुवंशिक हेतुकी |

<table>
<tr><th colspan="2">डॉ धरमवीर दत्ता स्मारक व्याख्यान पुरस्कार - 2012</th></tr>
<tr><td>डॉ आशीष गोयल<br>यकृतरोग विज्ञान विभाग<br>क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज<br>वेल्लोर - 632 004</td><td>सगर्भता संबद्ध यकृत विकार, एवं पोर्टल हाइपरटेंशन</td></tr>
<tr><th colspan="2">कुन्ती एवं डॉ ओम प्रकाश व्याख्यान पुरस्कार - 2012</th></tr>
<tr><td>डॉ स्मिता डी. महाले<br>प्रमुख<br>संरचना जैविकी प्रभाग<br>राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान<br>परेल, मुम्बई - 400 012</td><td>हॉर्मोन बंधन से संबद्ध आण्विक एवं कोशिकीय प्रक्रियाएं</td></tr>
<tr><th colspan="2">डॉ एम. के. शेषाद्री पुरस्कार - 2012</th></tr>
<tr><td>डॉ संजय लक्ष्मण चौहान<br>वैज्ञानिक 'एफ'<br>परिचालन अनुसंधान विभाग<br>राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान<br>परेल, मुम्बई - 400 012</td><td>सामुदायिक चिकित्साविज्ञान</td></tr>
<tr><th colspan="2">डॉ पी. एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार - 2012</th></tr>
<tr><td>डॉ विकाश कुमार दुबे<br>सह आचार्य<br>जैवप्रौद्योगिकी विभाग<br>भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान<br>गुवाहाटी - 781 039</td><td>लीशमानिया परजीवी में रिडॉक्स चयापचय</td></tr>
<tr><th colspan="2">डॉ टी. रामचन्द्र राव पुरस्कार - 2012</th></tr>
<tr><td>डॉ प्रज्ञा डी. यादव<br>वैज्ञानिक 'सी'<br>माइक्रोबियल कंटेनमेंट काम्पलेक्स<br>राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान<br>पाषाण, पुणे - 411 021</td><td>भारत में पशुजन्य वेक्टर बोर्न विषाणुओं का अध्ययन</td></tr>
<tr><th colspan="2">डॉ विद्या सागर पुरस्कार - 2012</th></tr>
<tr><td>डॉ रितुश्री कुकरेती<br>प्रधान वैज्ञानिक<br>जीनोमिक्स एवं आण्विक चिकित्साविज्ञान विभाग<br>इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स ऐण्ड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी<br>दिल्ली - 110 007</td><td>जटिल मस्तिष्क रोगों हेतु परिवर्तनीय औषध अनुक्रिया का आण्विक आधार</td></tr>
</table>

| | |
|---|---|
| **डॉ वी. एन. पटवर्धन पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ के. एन. चिदम्बरा मूर्ति**<br>विभागाध्यक्ष<br>शोध एवं पेटेंट्स प्रभाग<br>एम. एस. रमैया एकेडमी ऑफ हेल्थ ऐण्ड एप्लाइड साइंसेज़<br>बेंगलुरू - 560 054 | पोषणज मूल के अणुओं द्वारा कैंसर के निवारण एवं संदमन पर प्रक्रिया आधारित प्रमाण |
| **डॉ वाई. एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ डी. नागेश्वर राव**<br>आचार्य<br>जीवरसायन विभाग<br>अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान<br>नई दिल्ली - 110 029 | संक्रामक रोगों का प्रतिरक्षाविज्ञान : वैक्सीन की रूपरेखा के लिए मार्ग |
| **आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ जीमती सेतुरमन**<br>अतिरिक्त आचार्य<br>त्वचारोगविज्ञान विभाग<br>अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान<br>नई दिल्ली - 110 029<br>एवं<br>**डॉ सीमा सूद**<br>अतिरिक्त आचार्य<br>सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग<br>अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान<br>नई दिल्ली - 110 029 | संक्रामक रोगों का प्रतिरक्षाविज्ञान : वैक्सीन की रूपरेखा के लिए मार्ग<br>} संयुक्त रूप से<br>नैदानिकी में नवाचार |
| **आई सी एम आर एम. एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ संजय के. भडाडा**<br>सह आचार्य<br>अंतःस्रावीविज्ञान विभाग<br>स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान<br>चण्डीगढ़ - 160 012 | भारत में प्राथमिक हाइपर पैराथाइरॉयडिज्म पर अध्ययन |
| **कैंसर के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ ब्रमन्दम मानवती**<br>सहायक आचार्य<br>जीवरसायन विभाग<br>स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़<br>हैदराबाद विश्वविद्यालय<br>हैदराबाद - 500 046 | कैंसर विकास में एस्ट्रोजन रिसेप्टर की भूमिका |

| प्रो. बी. सी. श्रीवास्तव फाउण्डेशन पुरस्कार - 2012 | |
|---|---|
| **डॉ चन्द्रकान्त लहरिया**<br>नियमित प्रतिरक्षीकरण एवं नवीन वैक्सीन फोकल व्यक्ति<br>विश्व स्वास्थ्य संगठन, भारत<br>B7/24/2, डी डी ए फ्लैट्स<br>सफदरजंग एनक्लेव मुख्य<br>नई दिल्ली - 110 029 | समुदाय आधारित अनुसंधान का हस्तांतरण तथा जन स्वास्थ्य प्रयोग में कार्यक्रम मूल्यांकन |
| **प्रो. बी. के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार - 2012** | |
| **डॉ नीलू सिंह**<br>वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक<br>जीवरसायन प्रभाग<br>केन्द्रीय औषध अनुसंधान केन्द्र<br>लखनऊ - 226 031<br>एवं<br>**डॉ गजानन नागोजी सप्काल**<br>वैज्ञानिक 'सी'<br>माइक्रोबियल कंटेनमेंट कॉम्पलेक्स<br>राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान<br>पाषाण, पुणे - 411 021 | प्रथम भारतीय लीशमानिया डोनोवनी होल जीनोम का जन्म<br><br>} संयुक्त रूप से<br><br>भारत में विषाणुज मस्तिष्कशोथ तथा फ्लैवीविषाणु रोगजनन से संबद्ध कारक |

## भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

**भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें**

| | |
|---|---|
| आई सी एम आर के अंतर्गत भोपाल में राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की स्थापना की परियोजना से संबंधित वित्तीय संचालन समिति की बैठक | 25 फरवरी, 2015 |
| नैनो-मेडिसिन पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 26 फरवरी, 2015 |
| घाटमपुर स्थित मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान यूनिट (MRHRU) में स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण और अन्य जारी गतिविधियों पर चर्चा करने हेतु बैठक | 26 फरवरी, 2015 |
| असंचारी रोगों के भार, का अध्ययन करने हेतु सांख्यिकीय विधिविज्ञान पर चर्चा करने एवं अंतिम रूप देने हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक | 27 फरवरी, 2015 |
| आई सी एम आर के पारितोषिक/पुरस्कारों (2011 एवं 2012) हेतु चयन समिति की बैठक | 27 फरवरी, 2015 |
| नैनोमेडिसिन और नैनोफार्मास्युटिकल्स पर विशेषज्ञ समूह की बैठक | 27 फरवरी, 2015 |
| ऑनलाइन एक्स्ट्राम्यूरल प्री-प्रपोज़ल्स हेतु जांच समिति की बैठक | 2 मार्च, 2015 |
| बायोमेडिकल इंजीनियरिंग पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 2 मार्च, 2015 |
| मानव आनुवंशिकी पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 2 मार्च, 2015 |
| विष अनुसंधान पर टास्क फोर्स की बैठक | 3 मार्च, 2015 |
| क्लेफ्ट लिप और पैलेट एनॉमली परियोजना पर टास्क फोर्स समूह और अनुसंधानकर्ताओं की बैठक | 4 मार्च, 2015 |

| | |
|---|---|
| रुधिरविज्ञान, शरीररचना और एंथ्रोपोलॉजी पर संयुक्त परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 4 मार्च, 2015 |
| मधुमेह पर परियोजना प्रस्तावों की समीक्षा हेतु भारत-अमरीका (यू एस) सहयोग की बैठक | 4-5 मार्च, 2015 |
| मधुमेह और इसकी जटिलताओं के क्षेत्र में औषधीय पादप प्रभाग की अंतरएजेंसी बैठक | 5 मार्च, 2015 |
| राष्ट्रीय अशक्तता एवं पुनर्वास अनुसंधान नेटवर्क (NDRRN) के तकनीकी विशेषज्ञ समूह की बैठक | 9 मार्च, 2015 |
| कीटनाशक प्रतिरोध पर टास्क फोर्स के विशेषज्ञ दल की बैठक | 11 मार्च, 2015 |
| अशक्तता और पुनर्वास के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 13 मार्च, 2015 |
| तनाव प्रेरित निद्रा विकारों के क्षेत्र में टास्क फोर्स की बैठक | 13 मार्च, 2015 |
| विषविज्ञान पुनरीक्षण पैनल की बैठक | 13 मार्च, 2015 |
| तंत्रिका पेशीय विकारों पर परियोजना विशेषज्ञ समूह की बैठक | 13 मार्च, 2015 |
| ट्रांसलेशनल तंत्रिकाविज्ञान पर टास्क फोर्स की बैठक | 13 मार्च, 2015 |
| ई एन टी पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 16 मार्च, 2015 |
| इंडिया डाइबिटीज़ अध्ययन - पूर्वोत्तर क्षेत्र पर टास्क फोर्स परियोजना के विशेषज्ञ समूह की बैठक | 17 मार्च, 2015 |
| मानव स्वास्थ्य पर नॉन-आयोनाइज़िंग इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड के प्रभाव पर परियोजना पुनरीक्षण दल की बैठक | 18 मार्च, 2015 |
| प्रायोगिक चिकित्साविज्ञान, एनीस्थीसिया और शल्यक्रिया के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 18 मार्च, 2015 |
| जीवरासायनिक, प्रतिरक्षाविज्ञान और प्रत्यूर्जता पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक | 18 मार्च, 2015 |
| राष्ट्रीय अशक्तता और पुनर्वास अनुसंधान नेटवर्क (NDRRN) हेतु तकनीकी विशेषज्ञ समूह की बैठक | 23 मार्च, 2015 |
| ऑन लाइन एक्स्ट्राम्युरल प्री-प्रपोज़ल्स पर जांच समिति की बैठक | 25 मार्च, 2015 |
| शॉर्ट टर्म स्टूडेंटशिप (STS) से संबद्ध बैठक | 25 मार्च, 2015 |
| एम्फोम्यूल पर विशेषज्ञ समूह की बैठक | 27 मार्च, 2015 |
| प्रस्तावित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, गोरखपुर के लिए पदों के सृजन हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक | 27 मार्च, 2015 |

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

## भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87